डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 5 दिसम्बर 2008 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - छठा | अंक-आठवां | दिसम्बर-2008 | मासिक पत्रिका

4 **धन्य अजायब**
(मुम्बई में सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी)

5 **अनमोल संदेश**
(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से)
बैंगलोर

11 **सन्तों की जिम्मेवारी**
(स्वामी जी महाराज की बानी)
(सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज)
16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

27 **प्रेम–विरह**
(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन)
16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।
फोनः 0 99 50 55 66 71
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोनः 099 28 92 53 04
उप सम्पादिका : नंदिनी **सहयोग** : रेणु सचदेवा, रोज़ी आनन्द व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) (81)
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

धन्य अजायब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी मुम्बई में 7 से 11 जनवरी 2009 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

सभी प्रेमी सतसंगी भाई-बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि नीचे दिए पते पर पहुँचकर लाभ उठाएं।

आरोग्य भूरा भाई भवन,

शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा)

कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई - 400 067

फोन - 022-325 14 195, 93246 51 321

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा संदेश

अनमोल संदेश

बैंगलोर

आप सबका हजूर सावन-कृपाल के नाम में स्वागत है। हम आपकी बहुत कद्र करते हैं जो आप अपने बच्चों को जोकि सावन-कृपाल की आत्माएं हैं; यहाँ इस प्रोग्राम में लेकर आए हैं। यह सावन-कृपाल का ही बीज बोया हुआ है कि इन बच्चों का जीवन बनाने के लिए आपने बहुत लम्बा सफर किया है।

हम यह भी आशा करते हैं कि आप अपने बच्चों के लिए जो भावना लेकर यहाँ आए हैं उसी के मुताबिक यहाँ समय बिताएं। बच्चों को अनुशासन, सतसंग की महानता और बैठना सिखा सकें।

ऋषियों-मुनियों ने हिदायतें दी हैं कि माता-पिता का जीवन नेक-पाक हो और उनके ख्याल पवित्र हों ताकि आने वाली आत्मा बिल्कुल अच्छी हो। जब बच्चा माता के पेट में हो उस समय माता अपने गुरुदेव का ध्यान अवश्य करें और अपने गुरुदेव का दिया हुआ सिमरन करे। माता के लिए खास हिदायत है कि सिमरन करके अच्छा खाना खाएं जिसका बच्चे पर अच्छा असर पड़े। जब बच्चा इस संसार में आता है तब माता-पिता की जिम्मेवारी बढ़ जाती है।

परमात्मा ने हमें भोली आत्माएं दी हैं। सतसंगियो के घर में जन्म लेने वाली आत्माएं खास होती हैं। यह परमात्मा की बड़ी भारी दया होती है क्योंकि प्रभु ने उन्हें ‘नाम’ देना होता है। उन्होंने ‘नाम’ की कमाई करके अपने जीवन में पूर्ण बनना होता है, मनुष्य जीवन का फायदा उठाना होता है। ये सब कुछ तभी हो सकता है अगर सतसंगी माता-पिता बच्चों के लिए इतनी तैयारी करें जितना कि हमारे वेद-शास्त्र और सन्त-महात्मा कहते हैं क्योंकि माता-पिता के संस्कार ही बच्चे को भक्त या बदमाश बना सकते हैं।

आज के समय में माता-पिता बच्चे की दुनियावी तरक्की के बारे में तो बहुत कुछ सोचते हैं। बच्चों को पढ़ाते हैं और कई किस्म के काम भी सिखाते हैं लेकिन रूहानियत के बारे में कुछ भी नहीं बताते। वही बच्चे बड़े होकर माता-पिता की तरफ तवज्जो नहीं देते, अपनी जिम्मेवारी नहीं कबूलते कि जिन्होंने हमें पैदा किया है उनके प्रति भी हमारी कोई जिम्मेवारी है। परमात्मा एक ताकत है। हमें वापिस जाकर परमात्मा के सामने पेश होना पड़ेगा। हमें अफसोस है कि माता-पिता इस तरफ से बहुत लापरवाह हैं।

मैं बताया करता हूँ कि हमारे घर में मेरी माता का परमार्थ की तरफ बहुत गहरा झुकाव था। मेरी माता ने गुरु धारण किया हुआ था। मैं यह नहीं कह सकता कि उसका गुरु पूर्ण था या अधूरा था लेकिन हमारे घर का वातावरण बहुत अच्छा था। मेरी माता ईमानदारी से अपने गुरु की शिक्षा पर अमल करती थी। मेरी माता ने मेरे अंदर भी गुरुमत के संस्कार बड़े प्रेम से भरे। मैं जैसे-जैसे बड़ा हुआ मेरे अंदर भी गुरु मिलाप की इच्छा प्रबल होती गई।

वैसे तो हिन्दुस्तान बच्चे पैदा करने में काफी आगे है। शुरू-शुरू में जब पश्चिमी प्रेमी 77 आर.बी. आने लगे तो वे गाँव के लोगों से बच्चों के बारे में पूछते तो कोई बताता कि मेरे दस बच्चे हैं, कोई बताता कि मेरे बारह बच्चे हैं और कोई इससे भी ज्यादा बताता था। आखिर में मुझे कहना पड़ा कि यहाँ के लोग बच्चों के लिए मालोमाल हैं इनसे पूछने की जरूरत नहीं। पश्चिमी प्रेमी यह जानना चाहते थे कि ये लोग बच्चों का पालन-पोषण और तालीम का इंतजाम कैसे करते हैं?

आप सोचकर देखें! अगर अच्छे ख्यालों से बच्चे पैदा किया हो तो बच्चे माता-पिता की कद्र करेंगे। मैं जानता हूँ कि हिन्दुस्तान में कितने बच्चे माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं। जब मैं पिछले टूर पर कोलम्बिया गया तब मुझे वहाँ दो बुजुर्ग मिले। एक ने यह बताया कि दो शादियों से मेरे चौबिस बच्चे हैं, अफसोस! सारे ही बच्चे मुझे पीटते हैं,

बुरा समझते हैं। दूसरे ने बताया कि मेरे बारह-तेरह बच्चे हैं। उसकी भी यही हालत थी। उन्हें देखकर मेरे दिल में तरस आया अगर ये कम बच्चे पैदा करते तो अपने बच्चों की अच्छी देखभाल कर सकते थे। कबीर साहब कहते हैं:

जननी जने तां भक्तजन या दाता या सूर।
नहीं तो जननी बाँझ रहे काहे गँवाए नूर।।

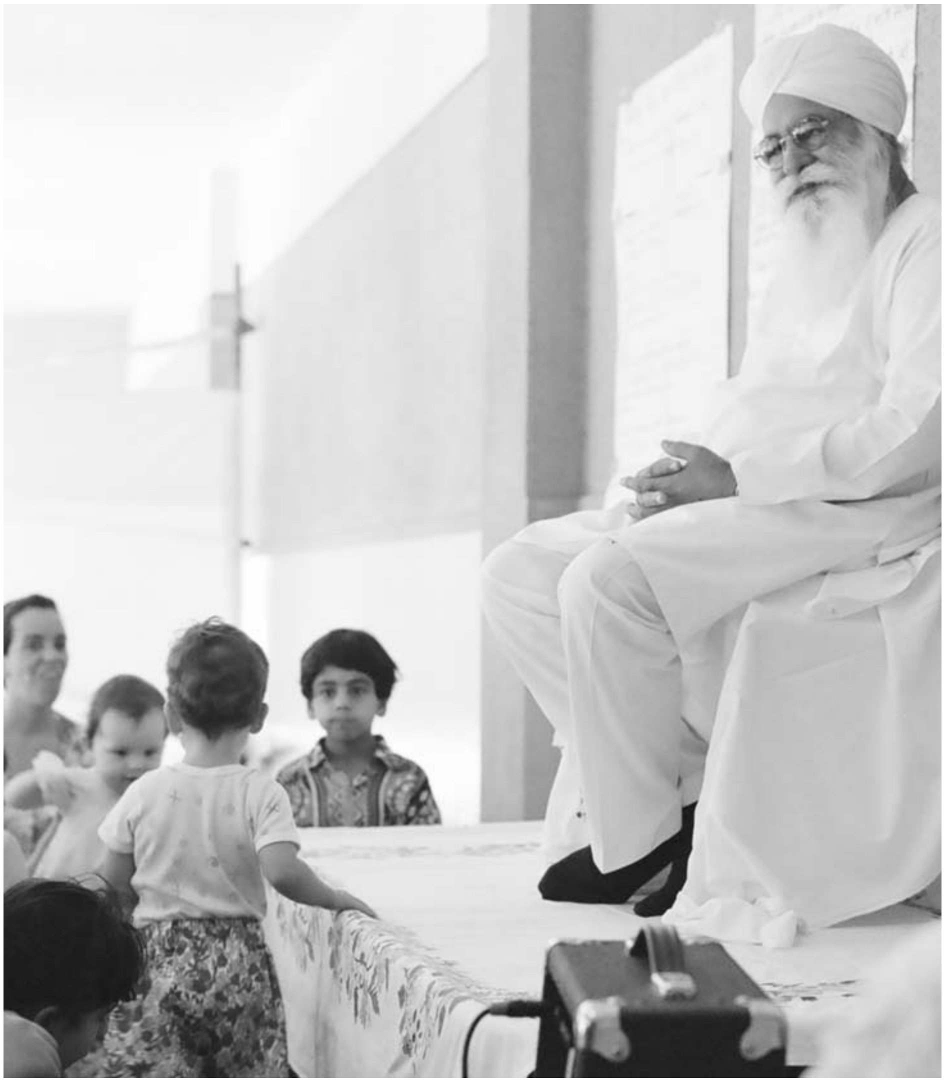

मुझे बच्चों के साथ बहुत लगाव है लेकिन जब कोई बच्चा शरारती बन जाता है तब मुझे बहुत अफसोस होता है कि इस बच्चे के माता-पिता ने अपनी जिम्मेवारी नहीं निभाई। अक्सर देखा गया है कि जिनके माता-पिता भजन-अभ्यास करते हैं उनके बच्चे भी उनकी नकल करते हैं। हमारी भी जिम्मेवारी है कि हम घर के वातावरण को सन्तमत के उसूलों के मुताबिक ढालें ताकि बच्चों की जिंदगी अच्छी बने।

आप लोगों ने अपने बच्चों के प्रति जिम्मेवारी समझनी है। आप लोग जब सतसंग में आते हैं या अपने मकान में रह रहे हैं उस समय अपने बच्चे का खास ख्याल रखें कि कहीं आपका बच्चा बाहर सड़क पर न चला जाएं क्योंकि हिन्दुस्तान का यातायात अमेरिका जैसा नहीं है; यहाँ की ड्राईविंग काफी चिन्ताजनक है। हिन्दुस्तान में ज्यादातर लोग किसी बीमारी के कारण नहीं बल्कि सड़क दुर्घटना में मरते हैं। प्रबंधकों ने आपके लिए सेवादार मुकर्र किए हैं अगर आपको बाजार से कोई सामान चाहिए तो आप उनकी सेवा का फायदा उठाएं।

आप बहुत दूर देश से अपने घर-बार के बंधन छोड़कर यहाँ आए हैं। हम आपकी अच्छी सेहत की कामना करते हैं। यहाँ इस प्रोग्राम में कुछ डॉक्टर प्रेमी भी भजन-अभ्यास के लिए आए हैं। शौकीन लोग उनका नाजायज फायदा न उठाएं अपना चेकअप, मसाज इत्यादि के लिए न कहें। ऐसा करने से आप अपनी मेहनत की कमाई मुफ्त में उन डॉक्टरों को दे बैठेंगे जिनसे आप शौकीया चेकअप या मसाज करवाएंगे। आप लोग उन डॉक्टर लोगों को भी भजन-सिमरन करने दें।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आप जिसका खाएंगे अगर आपके ऊपर उसका एक पाई का भी कर्ज है तो आपको उसका हिसाब देने के लिए दोबारा संसार में आना पड़ेगा। आपकी सेवा करने वाला आपके भजन में से हिस्सा अवश्य ले जाएगा।''

लंगर बनाने के लिए यहाँ वही प्रेमी मुकर्र किए गए हैं जो आश्रम में लंगर बनाते हैं। आप थोड़ी भूख रखकर ही खाना खाएं। कर्मों का

भुगतान तो करना ही पड़ता है लेकिन जिस तरह पिछले साल यहाँ कुछ प्रेमी बीमार हो गए थे। ज्यादातर हम खान-पान का परहेज न करने की वजह से ही बीमार पड़ते हैं क्योंकि हम जरूरत से ज्यादा खा लेते हैं। हमने बच्चों को भी खाना जरूरत के अनुसार ही देना है।

एक बार अमेरिका में भी ऐसा ही हुआ जैसा पिछले साल यहाँ बैंगलोर में हुआ था। वहाँ पर सब लोग खाँसने लगे, सब लोगों को बुखार हो गया जिसका असर मेरे और पप्पू के ऊपर भी हुआ। डा. बॉब को बुलवाया तो उसने हँसकर कहा, ''आपको भी कोई प्रेमी यह बीमारी दे गया है। यहाँ पर सबको यह समस्या बनी हुई है।'' अगर हम सब सफाई रखें, परहेज करें तो ऐसी छूत की बिमारियों से बच सकते हैं।

पिछले प्रोग्राम में जिन प्रेमियों ने यहाँ बैंगलोर में सेवा की थी उनमें से कुछ प्रेमियों ने मुझसे पत्र लिखकर यह पूछा कि क्या हमारी सेवा में कोई कमी थी, प्रेमी बीमार क्यों हुए? हमें इस बात का बहुत अफसोस है। उन्हें प्यार से समझाया गया कि इसमें सेवादारों का कोई कसूर नहीं होता सेवादार तो बहुत प्यार से सिमरन करके सेवा करते हैं। क्या हम सेवादारों को सहयोग देते हैं? जरूरत मुताबिक चीज का इस्तेमाल करना, सफाई रखना, परहेज रखना ही सहयोग होता है।

आशा करते हैं कि थोड़े बोले को ही ज्यादा समझना है। अपना भजन-सिमरन करना है। ज्यादा से ज्यादा अनुशासन में रहना है। अनुशासन में रहना ही हमारे लिए बेहतर है। कबीर साहब कहते हैंः

मन दिया किसी और को तन साधा के संग।
कहे कबीर कोरी गज्जी कैसे लग्गे रंग।।

ऐसा न हो कि आपका तन तो मेरे पास रहे लेकिन मन बाजारों में घूमता रहे कि बाबा जी ने सबको बाजार जाने से मना कर दिया है। इस तरह आत्मा पर 'नाम' का रंग कैसे चढ़ेगा? अगर हमने तन को यहाँ रखा है तो हमारा फर्ज बनता है कि मन को भी यहाँ हाजिर रखें। जिस मन को समझाने के लिए यहाँ आए हैं उसे सिमरन में लगाएं।

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सन्तों की जिम्मेवारी

स्वामी जी महाराज की बानी

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

घट-घट वासी शब्द रुप परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में करोड़ों बार नमस्कार है, जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर रहम किया और अपना यश करने का मौका दिया है।

कल मैंने स्वामी जी महाराज की बानी में बताया था कि किस तरह शिष्य ने एक-एक करके अपने अवगुण गुरु के आगे रखे। जब शिष्य को पता लग जाता है कि मेरे अंदर ये ऐब हैं तो वह गुरु के आगे फरियाद करता है। सन्त-सतगुरु उन ऐबों को छोड़ने में हमारी मदद करते हैं और युक्ति भी बताते हैं कि आप भजन- सिमरन करें तो इन ऐबों से छुटकारा पा लेंगे।

जब तक बीमार डॉक्टर के पास जाकर अपनी बीमारी के बारे में पूरी तरह से नहीं बताएगा तब तक डॉक्टर को समझ नहीं आती, डॉक्टर बीमार को दवाई नहीं दे सकता। डॉक्टर को तजुर्बा होता है और अपनी दवाई पर भरोसा होता है लेकिन जब बीमार डॉक्टर के पास जाकर अपना दुख बताता है तो वह डॉक्टर के तजुर्बे से फायदा उठाकर तंदरुस्ती हासिल कर लेता है।

आज के सतसंग का मजबून है कि काल सन्तों का तो कुछ नहीं बिगाड़ सकता, काल उनके नजदीक भी नहीं आ सकता लेकिन संगत में आकर सेवकों के अंदर घुसपैठ कर लेता है। सारे सतसंगी भाई-बहन होते हैं उन्हें आपस में लड़वा देता है; एक-दूसरे की निन्दा-चुगली में भी लगा देता है। **सन्तों की जिम्मेवारी** है अगर सेवक के अंदर ऐब हैं तो उसे प्यार से समझाएं। जो सेवक सतगुरु का हुक्म मानकर ऐब छोड़ देता है और अपनी गलती को स्वीकार कर लेता है वही सतसंगी है, वही सेवक है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''यह एक विधान है कि 'नाम' लेने के बाद भी अगर सेवक बुरी आदतें नहीं छोड़ता तो वह नर्क को जरूर जाएगा।'' गुरु ऐबों को छोड़ने के लिए कहता है और जातिय तौर पर भी समझाता है कि किसी की निन्दा चुगली न करें। किसी का बुरा न सोचें। गुरु की किसी के साथ ईर्ष्या नहीं होती। गुरु अपनी जिम्मेवारी से दूर नहीं जाता बेशक किसी को बुरा लगे! गलती करने के बाद जब सेवक अपनी सफाई पेश करते हुए कहता है कि मैंने यह गलती नहीं की तो वह एक गलती और कर रहा होता है।

अगर बच्चा आग में हाथ डालता है तो माता बच्चे का हाथ पकड़ लेती है, वह उसके रोने की भी परवाह नहीं करती। माता जानती है कि बच्चे का हाथ जल जाने से उसे भी तकलीफ होगी। इसी तरह **सन्तों की भी जिम्मेवारी** होती है। 'नाम' एक जिम्मेवारी है अगर जिम्मेवारी न हो तो पाँच साल का बच्चा भी दो-अक्षर बता सकता है।

सन्त-महात्माओं ने बहुत तपस्याएं की। गुरु अंगददेव जी ने अपने गुरु के बाग में जाकर खेती की। गुरु अमरदेव जी ने बुढ़ापे में बहुत कठिन मेहनत की। महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल ने अपने गुरुदेव का हुक्म मानकर 'शब्द-नाम' की कमाई की। तन, मन, धन और हर तरीके से अपने गुरु की सेवा की। हम आज के सतसंग को गौर से सुने और इस पर अमल करें।

कहाँ लग कहूं कुटिलता मन की। कान न माने गुरु के बचन की।।

सभी सन्त यही कहते हैं कि दुनिया में कोई भी हमारा दुश्मन नहीं। हम सब भाई-बहन है, हमारा दुश्मन हमारा मन है वह हमारे अंदर बैठा है। सेवक प्रार्थना करते हुए कहता है, ''हे सतगुरु! मैं अपने मन की कुटिलता और ऐब कैसे बताऊँ? यह मन इतना ढीठ हो गया है कि गुरु की भी परवाह नहीं करता।'' गुरु प्यार से समझाता है कि गलती करनी तो आसान है लेकिन उसका भुगतान करना बहुत मुश्किल होता है। पाप की अवधि तो छोटी होती है लेकिन सजा लम्बी होती है।

प्रेम गया और भक्ति छिपानी।। बैर ईर्षा की खुली खानी।।

जब हम भजन-सिमरन छोड़ देते हैं तो प्यार नहीं रह जाता। वहाँ ईर्ष्या आ जाती है, जहाँ ईर्ष्या है वहाँ निन्दा-चुगली आ जाती है।

माया लाई छलबल अपना। काल दिया कलमल का ढकना।।

माया और माया के पदार्थ धोखे और छल हैं। जब हम इन छलों या विषय-विकारों में आ जाते हैं तो हमारी बुद्धि मलीन हो जाती है। तब प्रकाश, शब्द, भक्ति के ऊपर ढक्कन उल्टा पड़ जाता है। हमारे अंदर अंधेरा होगा तो हमें कैसे पता चलेगा कि हमने किस तरफ जाना है? अंदर अंधेरा होने के कारण भक्ति का सूरज छिप जाता है आँखें होंगी तो ही हम चल सकते हैं, यही हमारे मन की हालत है।

ज्ञान बुद्धि बल सतसंग भाई। क्षिमा मौज गुरु गई हिराई।।

गुरु ने जो 'शब्द' का ज्ञान दिया था वह भूल गया। गुरु ने अपनी कृपा से सतसंग में जो दया-मेहर की थी वह भी भूल गया। सतसंग में जो सुनते है उसके ऊपर पर्दा पड़ जाता है। माया के ऐसे छल हैं कि जो कुछ भी हमारे पास होता है उनके ऊपर ढक्कन उल्टा पड़ जाता है।

देखो अचरज कहा न जाई। कलियुग का परभाव दिखाई।।
हैं गुर-बैहिन और गुर-भाई। तिन में निस दिन होत लड़ाई।।

देखो! काल किस तरह अपना प्रभाव बना लेता है यह सन्तों के तो नज़दीक नहीं आ सकता लेकिन संगत में प्रेमियों के अंदर घुसपैठ कर लेता है। हमारे अंदर 'शब्द' होने के कारण हम सब परमात्मा के बच्चे हैं। हम सब आपस में भाई-बहन हैं। हम सबने एक ही घर सच्चखंड में जाकर रहना है; हम एक-दूसरे की निन्दा चुगली करते हैं तो हमारा भजन-भाव कैसे बनेगा? निन्दा तो पापी की भी बुरी है अगर आप नामलेवा सतसंगी की निन्दा करते हैं बेशक वह आपका बेटा, बेटी या दामाद है तो आपके लिए नर्क और चौरासी तैयार होते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''निन्दा तो दूसरे की मैल खाने के बराबर है।'' गुरु नानक साहब कहते हैंः

निन्देया भली काहूं की नाहीं, मन मुख मुग्ध करन।
मुँह काले तिन निन्दका, नरके घोर पवन।

काल दाव अपना यों खेला। सतसंग में आय कीन्हों मेला।।

किस तरह काल अपना दाव चलाकर सतसंग में घुस जाता है। प्रेमियों को सतसंग से भी दूर ले जाता है।

सेवा में घुस पैठ कराई। और तरह कोइ घात न पाई।।

हम तन की सेवा करते हैं तो काल लाख बहाने बनाता है हमें सेवा नहीं करने देता। भजन-सिमरन करते हैं, सतसंग में जाते हैं तो यह काल लाखों ही विघ्न डालता है। आप कहते हैंः

कभी मित्र बन भरमावे, कभी बैरी बन धमकावे।
कभी रोगन में उलझावे, बहु भांति औपाध लगावे।।

यह काल कभी मित्र बनकर समझाना शुरु कर देता है कि तेरा इतना बड़ा कारोबार है अगर तू सतसंग में जाएगा तो तेरा बहुत नुकसान हो जाएगा। तू जितनी देर भजन-सिमरन में बैठता है इतनी देर तू और भी कारोबार कर सकता है। हमारे अंदर डर पैदा करता है अगर तू गुरु को मानेगा तो देवी-देवता रूठ जाएंगे।

सन्त कहते हैं, ''देवी-देवता बुरे नहीं। ये सूक्ष्म देश के वासी हैं, इन्हें मानने में कोई हर्ज नहीं। अफसोस! हम तो पत्थरों या मिट्टी के बनाए देवी-देवताओं के आगे माथे टेकते हैं।'' कबीर साहब कहते हैंः

माटी के कर देवी देवा, तिस अग्गे जीओ देही।
निर्जयों काटे सिर्जयों पूजे, अन्त काल को भारी।।

हम निर्जीवों के आगे बलि चढ़ाते हैं और जिनके अंदर जान है उनके गले काटते हैं। हम अपने सिर पर पापों का बोझ भारी कर लेते

हैं। यह काल कभी हमें मित्र बनकर समझाता है और कभी धमकाता है। जैसे भी इसका दाव लगता है यह हमें भजन-सिमरन और सतसंग से दूर ले जाता है।

सेवा में अस कीन्हा पेचा। मन को सब के धर धर खैंचा।।

यह मन हमारे अंदर से ही चाबी घुमाता है। मेरे पास कई प्रेमी आकर कहते हैं कि हमने नरमा(कपास) चुगना था या हमारा यह कारोबार था। मैं उन प्रेमियों को हँसकर कहता हूँ, ''देखो प्यारेयो! मैं भी जमींदार हूँ, अपनी रोजी-रोटी कमाता हूँ। क्या आप लोग मुझसे ज्यादा कारोबार करते हैं?'' हम मन के दास हो जाते हैं। मामूली बात के लिए सतसंग छोड़ देते हैं फिर बाद में पछताते भी हैं।

मैंने यह भी देखा है कि जब प्रेमी सतसंग छोड़कर काम में लग जाते हैं तो उन्हें कोई फायदा नहीं होता बल्कि कई दफा तो नुकसान भी हो जाता है फिर वे मेरे पास आकर कहते हैं, ''बाबाजी! हम सतसंग में नहीं आए तो हमारा यह नुकसान हो गया।''

सन्तमत ऐसी नहीं है कि बाबा पूजा लेकर गुजर करता है और हम खेती-बाड़ी या नौकरी करते हैं। सन्तमत में हर किसी को हुक्म है कि अपनी मेहनत की कमाई खाए। गुरु को करोड़ों दर्जे ज्यादा सख्त हुक्म है कि शिष्य की सुई तक ग्रहण न करें। कबीर साहब कहते हैं:

शिष्य को ऐसा चाहिए गुरु को सरबत दे।
गुरु को ऐसा चाहिए शिष्य का कछू न ले।।

सेवक का धर्म है कि उसके पास जो कुछ भी है उसे गुरु का समझे। गुरुमुखों का धर्म बहुत कठिन होता है। सन्तों पर तो काल का जोर नहीं चलता संगत में प्रेमियों के अंदर ही चाबियाँ घुमाता रहता है।

गुरु ताड़ें सतसंगी झींखें। काल लगाई ऐसी लीकें।।

जब गुरु को पता लगता है कि मेरा सेवक ऐबों, पापों या निन्दा-चुगली में ग्रस्त हो रहा है तो गुरु इसे ताड़ता है लेकिन यह आगे से

अनेकों ही सवाल-जवाब करता है और कहता है कि मुझमें तो ये ऐब हैं ही नहीं। यह जीव काल के बस में आकर काल का जीव हो चुका है।

गुरु समझावें सीख न मानें। मन मत अपनी फिर फिर ठानें।।

सन्तों की जिम्मेवारी है इसलिए वे हमें समझाते हैं लेकिन यह जीव उनकी शिक्षा को सुनकर खुश नहीं होता। यह मन का दास है, मन की बात ही मानता है। क्या मन ने कभी अपने ऐब माने हैं? यह मन तो इंकार कर देता है।

मैं आर्मी की हँसने वाली एक बात बताया करता हूँ कि सन् 1948 में परमात्मा की दया से हिन्दुस्तान को कश्मीर पर फतेह मिली। उसमें फर्स्ट पटियाला और फर्स्ट पंजाब की पलटनों ने लड़ाई लड़ी थी। जब हम पठानकोट अमृतसर वापिस आए तो शिरोमणि कमेटी ने हमें हर जगह अच्छे खाने खिलाए क्योंकि जीत की बहुत भारी खुशी थी।

जब हम पटियाला आए तो वहाँ के राजा और उस शहर के लोगों ने हमारे लिए अच्छे खाने का इंतजाम किया और बहरूपिए बुलवाए। फर्स्ट पटियाला सारे हिन्दुस्तान में बहुत मशहूर आर्मी हुई है। बहरूपियों ने नकल की कि फर्स्ट पटियाला का सिपाही लाहौर स्टेशन पर उतरा। वह अनारकली बाजार में गया। वहाँ बहरूपिया उसे जूते मारने लगा। जब सौ जूते पूरे होने वाले होते तो वह सिपाही सिर हिला देता कि ऐसा न सोचें! मैं पटियाला का बहादुर सिपाही नहीं। मन की यही हालत है। बहरूपिए का काम तो नकल करना है लेकिन उसमें से ज्ञान तो हमने हासिल करना है। मन ऐसा है कि करोड़ो ऐब-पाप करके सच्चा-सुच्चा होकर खड़ा हो जाता है।

गुरु को देवें दोष लगाई। फिर फिर चौरासी भरमाई।।

हम मन के बहकावे में आकर गुरु में ही दोष निकालने शुरु कर देते हैं कि आप जो कह रहे हैं मुझमें तो ये ऐब है ही नहीं। सन्त कहते हैं कि गुरु निन्दक को चौरासी जरूर मिलती है। कबीर साहब कहते हैं:

कबीरा हरि के रुठते, गुरु की शरणी जाए।
कहे कबीर गुरु रुठे तो, हरि न होत सहाए।।

परमात्मा रुठ जाए तो परमात्मा को मनाने वाला गुरु है क्योंकि गुरु परमात्मा में समाया हुआ है अगर गुरु रुठ जाए तो हरि भी मदद नहीं करता क्योंकि परमात्मा से मिलाने वाला गुरु ही है। आज तक किसी ने भी परमात्मा से सीधी मदद हासिल नहीं की जब भी की किसी सन्त-सतगुरु के जरिए ही की।

इतने दिन सतसंग जो कीया। कुछ भी असर न उसका हुआ।।

इतने दिन इतने महीने इतने साल सतसंग सुना लेकिन उसका कुछ भी असर नहीं हुआ अगर गुरु के साथ सवाल-जवाब किए, गुरु की या सतसंगियों की निन्दा की तो क्या फायदा हुआ? सतसंग सुनकर हमें समझ आ जानी चाहिए थी कि निन्दा का कितना बुरा असर होता है। गुरु का हुक्म न मानना कितना बुरा है।

सतगुरु से अब करूँ पुकारा। काल मार मन लेव सुधारा।।
तुम से काल जबर नहिं होई। काटो फंदा जम का सोई।।

अगर शिष्य सच्चा है फिर भी उसे मन या काल की ताकतें परेशान करें तो वह गुरु के आगे पुकार करता है, ''हे सतगुरु! मुझे काल की ताकतें परेशान कर रही हैं लेकिन ये ताकतें तुझसे ताकतवर नहीं।'' तब गुरु आपसे दूर नहीं। 'शब्द-रुप' गुरु आपके अंदर दाईं तरफ और काल बाईं तरफ बैठा है।

जब शिष्य प्रार्थना करता है तो गुरु जरूर पहुँचता है। जब हम सच्चे दिल से सिमरन के जरिए नौं द्वारे खाली करके तीसरे तिल पर आँखों के पीछे एकाग्र हो जाते हैं सूरज चंद्रमा सितारे पार करके गुरु के स्वरूप को प्रकट कर लेते हैं उस समय ही हम सच्चे शिष्य बनते हैं। उस समय गुरु हमसे एक सैंकिंड भी दूर नहीं होता, गुरु को याद करें वह हमारे सामने होगा। बेशक दरवाजा बंद हो! झखड़ चल रहा हो!

ओले पड़ रहे हो! गुरु परछाई की तरह हमारे साथ रहता है अगर हम भजन-सिमरन नहीं करते तो इसमें गुरु का क्या कसूर है?

तुम्हरे चरन प्रीत होय गाढ़ी। सतसंगियन मन शुद्धता बाढ़ी।।
हिल मिल कर सब करें अनन्दा। द्रोह घात का काटो फंदा।।

जब हम प्रार्थना करते हैं तो सतगुरु जरूर मदद करता है। इसलिए हमें भी चाहिए कि हम सब मिलकर गुरु के शब्द बोले, गुरु का सिमरन करें और मिलकर चलें। हम सबके अंदर 'शब्द' होने के कारण हम एक ही बाप के बच्चे हैं; हम सबने एक ही घर में जाकर रहना है।

सतसंगी सब मिल कर चालें। प्रीत परस्पर पल पल पालें।।

जो सेवक अंदर जाता है वह दुनिया का सामान नहीं माँगता। वह तो चाहता है कि हम सब इकट्ठे होकर भजन करें। इकट्ठे होकर एक परिवार की तरह रहें। हे सतगुरु! हमारे ऊपर मेहर कर, दया कर।

यही हुकुम अब सबको कीना। जो नहिं माने सो काल अधीना।।

सभी सन्तों ने आकर यही हुक्म दिया कि हम सब एक ही पिता के बच्चे हैं। गुरु की आज्ञा का पालन करना सबसे ऊँचा और जरूरी हुक्म है। जो गुरु की आज्ञा का पालन नहीं करता वह काल का जीव है, काल उसकी खबर लेता है।

जो कोई माने हुकुम हमारा। पहुंचे वह सतगुरु दरबारा।।

आप कहते हैं, ''जो शिष्य सतगुरु की आज्ञा का पालन करता है भजन-सिमरन करता है। वह मेरे घर, मेरे दरबार में आ जाएगा।''

बुद्धि अपनी लेव सम्हारी। बचन गुरु यह मन में धारी।।
जिन के मन को काल सम्हारा। सो नहिं माने बचन हमारा।।

स्वामी जी कहते हैं, ''जिनके मन इतने जबरदस्त है उन्हें न तो किसी गुरु की न किसी पीर की परवाह है। वे काल के जीव है।''

अब मन में चिन्ता मत राखो। सत्तनाम अब छिन छिन भाखो।।
दीन हीन जानो अपने को। निपट नीच मानो अपने को।।

हमने सदा इस संसार में नहीं रहना, एक दिन यहाँ से चले जाना है। साँस है तो जिंदगी है साँस रुक गया तो मौत है। इसलिए हमने संसार में जो चार दिन बिताने है वे नम्रता से बिताएं। सन्त कहते हैं कि जो बाहर से नम्रता दिखाता है लेकिन अंदर कपट है यह मीठी तपेदिक है। हम जो कुछ भी बाहर बोलते हैं अंदर भी वैसा ही हो।

अब अहंकार करो क्या किस से। मौत धार दम दम में बरसे।।

हमें किस चीज़ का अहंकार है। माया का अहंकार करते हैं? क्या कभी कंगालों की हालत नहीं देखी? जवानी का अंहकार करते है? क्या कभी किसी का बुढ़ापा नहीं देखा? अच्छी सेहत का अहंकार है? क्या कभी अस्पतालों में जाकर बीमारों की हालत नहीं देखी?

मैं न्यूयार्क अस्पताल में एक प्रेमी से मिलने गया। मैंने वहाँ ऐसे रोगी देखे जिनका केवल साँस ही चल रहा था, वे बिल्कुल सूखे हुए थे। मुझे वहाँ तरह-तरह के रोगियों को देखने का मौका मिला। वहाँ जाकर पता लगता है कि अहंकार करने वाली कौन-सी चीज़ है?

जैसे जग में महा भिखारी। दीन गरीबी उन सब धारी।।
कोई उसको कुछ कह लेवे। मन को अपने जरा न देवे।।

अब स्वामी जी महाराज एक बड़ी अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं कि भिखारी ने अपने अंदर इतनी दीनता धारण की होती है कि वह किसी के घर जाकर अलख जगाता है, भीख माँगता है। घरवाले उसे गालियाँ निकालते हैं, बुरा-भला भी कह देते हैं। औरतें ताने भी मारती हैं कि तू हट्टा- कट्टा है कमाकर क्यों नहीं खाता? लेकिन उसे किसी बात की परवाह नहीं होती वह अपनी अलख जगाए रखता है। उसने अपने अंदर कितनी नम्रता धारण की होती है?

भिखारी को तो किसी ने सतसंग भी नहीं सुनाया होता। हमने तो इतने सतसंग सुने फिर भी उस भिखारी जैसा मन नहीं बनाया अगर सतगुरु मामूली सा भी कह दें कि तू यह ऐब छोड़ दे तो हम सतसंग ही छोड़ देत हैं।

तुम सतसंग कर क्या फल पाया। उनका सा भी मन न बनाया।।
अब ऐसा तुम्हें करना चाहिये। अपने मन अधीनी धरिये।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''उसे भूला न समझें जो शाम को घर आ जाए अगर पहले गलती हो गई है तो अब अपने अंदर नम्रता धारण करें, आज्ञा का पालन करने का यत्न करें और हुक्म मानने की आदत डालें।''

हाहा खाओ चरन पखालो। आपस में तुम हिल मिल चालो।।

अगर निन्दा करके या हुक्म की उलंघना करके कोई पाप कर लिया है तो पछताएं। अब मिल-जुलकर, प्रेम-प्यार से सतसंग करें, आज्ञा का पालन करें।

जो कोइ जिस से रूठे भाई। सोई तिसको लेय मनाई।।
हाथ जोड़ बहु बिनती करे। करे खुशामद चरनन पड़े।।

अगर बुरा शब्द बोलकर किसी का दिल दुखा दिया है, वह आपसे नाराज हो गया है तो उससे माफी माँगें। उसके पैर पकड़कर कहें, ''हे भाई! मुझसे गलती हो गई है तू मुझे माफ कर दे।''

इतने पै जो माने नाहीं। गुनहगार सतगुरु का भाई।।

आपने उसके पैर पकड़कर माफी माँग ली है अगर वह माफ नहीं करता तो वह दोगुना दोषी है।

जलन ईर्षा जिस घट आई। वह दुख कैसे जाय नसाई।।
कर विवेक मन को समझावे। या सतगुरु की दया समावे।।

विवेक बुद्धि उसे कहते हैं जो सच और झूठ का निर्णय करके पछतावा करे। पछतावा करने के दो ही रास्ते हैं। एक तो यह कि हम पछतावा करें कि मुझसे पाप हो गया है, मैंने आज्ञा का पालन नहीं किया और सतसंगियों की निन्दा की है। अगर ऐसा नहीं कर सकते तो भजन-सिमरन करके गुरु के आगे फरियाद करें गुरु जरूर मदद करेगा।

सतगुरु दया बिना नहिं होई। बिन विवेक नहिं जावे खोई।।

सतगुरु की दया के बिना जीव कुछ भी नहीं कर सकता। हमने सबसे पहले सतगुरु की दया प्राप्त करनी है। दया का मतलब यह नहीं कि हम सतगुरु के आगे विनती भी करते रहें और हाय-हाय भी करते रहें। अगर हमारे अंदर उसी तरह का काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार है और हम भजन भी न करें; तब क्या परमात्मा हमारी विनती सुनेगा या हम जो बुराईयाँ करते हैं उन्हें देखेगा?

मैं अपने पिता जी की बात बताया करता हूँ कि उन्हें 'नाम' नहीं मिला था। वह सुबह जपजी साहब पढ़ते थे और साथ-साथ नौकरों को गालियाँ भी निकालते थे। मैं हँसकर उनसे कहता, ''परमात्मा आपका जपजी साहब लेखे लगाएगा या आपकी गालियाँ लेखे लगाएगा?'' इसलिए हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। एक तरफ तो हम फरियाद कर रहे होते हैं और दूसरी तरफ अपने आप पर मैल भी लगाते जाते हैं।

जो सतगुरु निज दया विचारें। तब यह दुरमत मन से टारें।।
जो कोइ दीन कपट से होई। ता का रोग कहो कस जाई।।

अगर कोई कपट से दीन होता है लेकिन उसके अंदर ईर्ष्या है तो उसका कपट कैसे दूर होगा? वह दोगुनी सजा का भागी है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''बाहर से निकलकर अंदर के पर्दे में बैठ जाना कितना गुनाह है।''

कपटी को ऐसा अब चाही। करे सफाई कपट नसाई।।
जो बल उसका पेश न जावे। तो सतगुरु से बिनती लावे।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप अपने अंदर की सफाई करें। हम सिमरन से ही अपने अंदर की सफाई कर सकते हैं। सिमरन हमारी आत्मा के शीशे को इस तरह साफ कर देता है जिस तरह हम मकान का कूड़ा झाडू से बाहर निकाल देते हैं। हम सिमरन करते हैं तो सतगुरु की दया जरूर प्राप्त होती है।''

खोले कपट न राखे परदा। गुरु से खोले रख रख सरधा।।

आप कहते हैं, ''अगर हम गुरु के पास जाकर भी झूठ बोलते हैं तो सच बोलने वाली जगह कौन-सी है? हमारे अंदर जो ऐब भरे हुए हैं वे गुरु को बता दें।''

मैं बताया करता हूँ, ''बहुत से अमेरिकन लड़के-लड़कियों से अगर कोई गलती हो जाती है तो वे संगत में खड़े होकर अपनी गलती को मानते हैं। हमारे कई हिन्दुस्तानी प्रेमी भी ऐसे हैं जिन्हें अपनी आत्मा पर रहम है। इंसान गलतियों का पुतला है अगर उनसे कोई गलती हो जाती है तो वे कहते हैं महाराज जी हमसे बड़ा ऐब हो गया है।''

मैं महाराज सावन सिंह जी के दरबार में देखता रहा हूँ कि वहाँ एक बार एक आदमी अपने गले में जूतों का हार डालकर और अपना मुँह काला करके खड़ा हो गया। महाराज जी सतसंग करके उठे तो वह रोकर कहने लगा, ''महाराज जी! गलती हो गई है।'' महाराज जी ने कहा, ''कोई इसके पाप लेने वाला है?'' वहाँ सन्नाटा छा गया। कौन किसी के पाप उठा सकता है क्योंकि बोझ तो अपना ही नहीं उठाया जाता। जब संगत में से कोई नहीं बोला तो महाराज जी ने कहा, ''अच्छा बैठ जा! आगे से ऐसा मत करना।''

इसलिए आप प्यार से कहते हैं, ''अगर आप गुरु के पास जाकर भी झूठ बोलेंगे तो किस तरह आपका रोग दूर होगा?''

अपने औगुन उन से भाखे। बार बार बिनती कर आखे।।
हे स्वामी! मेरी कपट निकारो। मैं बलहीन मोहिं तुम तारो।।

आप कहते हैं कि सच्चे दिल और प्यार से अपने गुरु से कहें, ''हे महाराज! मैं निर्बल हूँ मुझ पर दया करें।'' मैं बताया करता हूँ प्यारेयो! सन्त गरीब नवाज़ होते हैं, वे बहुत दया लेकर संसार में आते हैं। देने वाला तो देने के लिए आता है मसला तो लेने वाले का है।

सच्चे पातशाह महाराज सावन सिंह जी ने पैंतालीस साल और महाराज कृपाल ने पच्चीस साल होका दिया। जैसा-जैसा किसी ने बर्तन बनाया उन्होंने वैसी-वैसी वस्तु डाली; मसला तो हमारे बर्तन का है। प्यारेयो! शेरनी का दूध रखने के लिए सोने के बर्तन की जरूरत है इसी तरह जहाँ 'नाम' प्रकट करना है, गुरु को बिठाना है उस हृदय को भी पवित्र करना है अगर वह हृदय काम, क्रोध या निन्दा-चुगली से भरा होगा तो गुरु वहाँ कैसे बैठेगा? तुलसी साहब कहते हैं:

दिल का हुजरा साफ कर जाना के आने के लिए।
ध्यान गैरों का उठा उसके बिठाने के लिए।।

तुम्हारी दया होय जब भारी। घट से निकसे कपट हमारी।।
और उपाय न इसका कोई। बिना दया कोई जुक्ति न होई।।
मन कपटी घट घट में पैठा। सब जीवन का पकड़ा फेंटा।।
कर सतसंग भौ भाव बसावे। गुरु की दया कपट नस जावे।।

अगर हम गुरु के आगे विनती करते हैं तो गुरु की दया से सतसंग में हमारे ऐब, कपट एक-एक करके अपने आप छूटते जाते हैं। सतसंग को अपने ऊपर लागू करने में ही फायदा है।

पश्चिम के प्रेमी जब यहाँ आते हैं तो मैं पहले उनका स्वागत करता हूँ फिर उनसे पूछता हूँ तो वे यही कहते हैं, ''जब हम वहाँ से चले थे तो हमारा दिमाग सवालों से भरा हुआ था लेकिन अब हमारा कोई सवाल नहीं। बस दो मिनट बैठकर दर्शन करने दें।''

अगर हमारे अंदर श्रद्धा और प्यार है तो गुरु का चेहरा ही लाखों सवालों का जवाब होता है। मैंने अपनी जिंदगी में अपने गुरु से कभी

कोई सवाल नहीं किया था। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब समझ आ जाती है कि गुरु कुल मालिक है अंदर बैठा सब कुछ जानता है तो उससे क्या सवाल करेंगे?''

जो गुरु आगे कपट न खोले। निष्कपटी अपने को बोले।।
दोहरा कपट लिये है सोई। उसका जतन कभी नहिं होई।।

जिसे सतगुरु के वचन की कोई कद्र नहीं। वह सतसंग के लायक नहीं। वह जीव काल के अधीन है, काल का बहकाया हुआ है फिर सन्त कहते हैं, अच्छा भाई! तू और भटक ले। भीखा शाह कहते हैं:

हटाया हटे नहीं, गहे न मन की ठौर।
बहते को बह जाने दे, दे धक्के दो और।।

वह सतसंग के लायक नाहीं। वह असाध रोगी जग माहीं।।

जब किसी को असाध रोग हो जाता है तो डॉक्टर यही कहता है कि इसे घर ले जाकर इसकी सेवा करें, अब इसका थोड़ा ही समय है।

पर जो सतगुरु समरथ पावे। और चरनन पर सीस नवावे।।
पड़ा रहे सतसंग के माहीं। धीरे धीरे तो छुट जाई।।

आप प्यार से कहते हैं, ''अगर गुरु मिल गया, 'नाम' मिल गया और जीव सतसंग नहीं छोड़ता फिर चाहे मन हमारे साथ चलाकियाँ या हेरा-फेरियाँ करता रहे, एक दिन हम पर दया जरूर हो जाएगी।''

महाराज सावन कहा करते थे, ''पानी में पड़ा हुआ पत्थर कम से कम गर्मी से तो बचा हुआ है। इसी तरह यह मन किसी दिन तो मान जाएगा! पता नहीं साधु के किस शब्द ने हमारी जिंदगी पलट देनी है।''

सतसंग जल जो कोई पावे। सब मैलाई कट कट जावे।।
सतसंग महिमा कहा बखानूँ। अस सम यत्न और नहिं मानूँ।।

कमाई वाले महात्मा की संगत पवित्र से पवित्र सरोवर है। महात्मा की संगत ही हमारे पापों को उतारने की दवाई है।

कलजुग खास यत्न कोई नाहीं। बिन सतसंग संत नहिं गाई।।

हम कलयुग में सतसंग के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते। सभी सन्त-महात्माओं ने सतसंग को ही मुक्ति का रास्ता बताया है। सभी सन्त कहते हैं कि किसी पूर्ण महात्मा की संगत-सोहबत में जाएं उनके वचनों पर अमल करें। सतगुरु, 'नाम' और सतसंग ही मुक्ति के साधन हैं। जिसने ये तीनों कायम कर लिए समझ लें कि वह मुक्ति के द्वार पर पहुँच गया है क्योंकि सतसंग में जाकर ही हमें हमारी गलतियों का पता लगता है। सतगुरु हमें 'नाम' देते हैं और मुक्ति 'नाम' में है।

कर्म धर्म तप पूजा दाना। इस करनी से नित बढ़े माना।।
और ज्यों की त्यों होय न आवे। तौ फल उलटा उसका पावे।।
याते संतन काढ़ि निकारी। सतसंग की महिमा कहि भारी।।

स्वामी जी महाराज ने इस शब्द में हमें बड़े प्यार से समझाया कि मुक्ति 'नाम' में है और 'नाम' सतगुरु से मिलता है। सतसंग में आकर ही हमारी तहकीकात पूरी होती है। आज तक जिसे भी समझ आई वह किसी महात्मा की संगत में जाकर ही आई।

पुराणों में कथा आती है कि एक बार विश्वामित्र और वशिष्ठ के बीच बहस हो गई। विश्वामित्र ने कहा कि जप-तप बड़ा है। विश्वामित्र ने साठ हजार साल जप-तप किया था। वशिष्ठ जी ने कहा कि सतसंग और संगत बड़ी है। दोनों ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश के पास जाकर कहा कि हमारा फैसला करें। विश्वामित्र कहता है कि जप-तप बड़ा है और मुक्ति का साधन है लेकिन मैं कहता हूँ कि सतसंग बड़ा है। तीनों देवताओं ने कहा कि हम तुम्हारा न्याय नहीं कर सकते, तुम शेषनाग के पास जाकर अपना न्याय करवाओ।

वे दोनों शेषनाग के पास पहुँचे तो शेषनाग ने कहा, ''मैं तुम्हारा न्याय तो कर सकता हूँ लेकिन मेरे सिर पर धरती का बोझ है अगर तुम इस धरती को थोड़ा सा उठा दो तो मैं तुम्हारा न्याय कर दूँगा।''

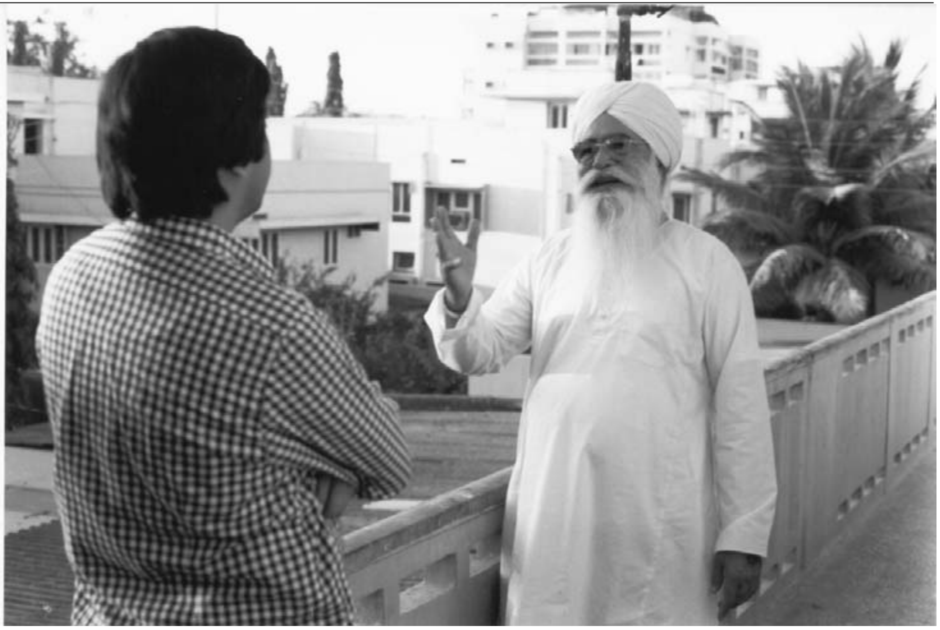

विश्वामित्र ने थोड़ा-थोड़ा करके साठ हजार साल के तप का फल लगा दिया लेकिन धरती ऊपर नहीं उठी। वशिष्ठ ने एक घड़ी के सतसंग का फल दिया तो धरती ऊपर उठ गई और शेषनाग आजाद होकर खेलने लग गया। विश्वामित्र ने शेषनाग से कहा, ''अब तुम आजाद हो गए हो हमारा न्याय करो।'' शेषनाग ने कहा, ''तुम्हारा न्याय तो हो गया है लेकिन तुम्हें समझ नहीं आया। तुम्हारे साठ हजार साल के जप-तप के फल से धरती ऊपर नहीं उठी लेकिन वशिष्ठ के एक घड़ी के सतसंग के फल से धरती ऊपर उठ गई।'' गुरु नानक देव जी कहते हैं:

महिमा साधु संग की सुन मेरे मीता।
मैल गई अध कोट भए निर्मल चीता।

हमारी आत्मा चींटी है, मन हाथी है। आत्मा हाथी मन की परवाह नहीं करती, 'शब्द-नाम' की कमाई करके अपने घर पहुँच जाती है। स्वामी जी महाराज ने सतसंग की बहुत महिमा गाई है। हमने सतसंग पर अमल करना है। भजन-सिमरन करना है और अपने जीवन को सफल बनाना है।

❊❊❊

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

आजकल आम लोग **प्रेम** को गलत समझ रहे हैं अगर प्रेम के बारे में कुछ पूछना हो या प्रेम की झलक देखनी हो तो किसी सच्चे प्रेमी से पूछें? **प्रेम** की कथा सुननी हो तो मंसूर या ईसा को याद करें जो हँसते-हँसते सूली पर चढ़ गए। मीरा बाई को याद करें जो जहर का प्याला अमृत समझकर पी गई। गुरु अर्जुनदेव जी को याद करें जिन्होंने गर्म तवे पर बैठकर *तेरा भाणा मीठा लागे* को ही उचारा। **प्रेम** के रास्ते पर जान कुर्बान करने में आलौकिक व निराला रस है। इसे प्रेमी ही जानता है या जिसकी आँखे **प्रेम** की झलक देती हैं।

प्रेम एक अदभुत चीज है। प्रेम के लफ्जों से ग्रन्थों के ग्रन्थ भरे हुए हैं। प्रेम के आँसुओं में गर्म-गर्म समुद्र ठाठे मारता है। प्रेम की आहों में हजारो तूफान जोश मारते हैं। **प्रेम** की घड़ियों में काल और समय का ही पता नहीं रहता। जहाँ **प्रेम** का वास हो जाए वह जगह सुहावनी हो जाती है, उस मंडल में खास किस्म की खुशी होती है; जिसे प्रेमी हृदय ही महसूस करते हैं। हजारों अक्लें इसके आगे तुच्छ हैं।

प्रेम का असर सिर्फ इंसानों पर ही नहीं हैवान भी इसके असर से खाली नहीं रहते। प्रेम सारे दर्दों का एक मुकम्मल इलाज है। मौलाना रूम साहब फरमाते हैं, ''हे मेरी मुहब्बत के जनून! तू खुश रह क्योंकि तू ही मेरी सब बिमारियों का ताबीब है।''

अगर हम **प्रेम** के जानकार हो जाएं! हम खुद ही सब दुखों के डाक्टर बन सकते है। हमारे सब दुख-दर्द **प्रेम** के असूल को भूलने की वजह से ही हैं। **प्रेम** को याद करके आनन्द और खुशी की लहरें चल सकती हैं। केवल मौहब्बत ही आराम और आनन्द का कारण है इसके

बिना जीवन बेरस है, जिंदगी खुष्क है। बेहस्त और गुलजारा सब बेमतलब हैं। **प्रेम** से खाली शाही महल भी श्मशान भूमि या कब्रिस्तान से कम खौफनाक नहीं। टूटी हुई झोंपड़ी भी प्रेम से रोशन हो जाती है। **प्रेम** से उजाड़ में भी रौनक हो जाती हैं। प्रेम के बिना बस्ती शहर उजाड़ मालूम पड़ते हैं।

प्रेम वह दुर्लभ धन है जिसके बिना कुछ भी नहीं। जिसके अंदर **प्रेम** का रस नहीं वह इंसान कहलाने का हकदार नहीं। दुनिया सुहावनी व खूबसुरत है, इंसान इसकी तरफ बेइख्तियार खिंचा चला जाता है जिसका कारण दुनिया और इंसान को बनाने वाला एक मालिक है। मालिक ने इन दोनों के बीच **प्रेम** का जज्बा भर रखा है।

यह दुनिया **प्रेम** के आसरे ही कायम है। मौहब्बत का खिंचाव सारी दुनिया में काम कर रहा है। सूरज, चाँद, सितारे, जमीन, आसमान सब तरफ उसका जल्वा है। इस दुनिया में इंसान उस मालिक का नमूना है और मालिक **प्रेम** है इसलिए उसकी सिफत प्रेम है। इंसान में प्रेम होने की वजह से ही सारी सृष्टि में **प्रेम** काम कर रहा है।

जहाँ **प्रेम** है वहाँ जिंदगी है जहाँ प्रेम नहीं वहाँ जीने का कोई स्वाद नहीं। वही इंसान है जिसके अंदर **प्रेम** है, मालिक का प्रेम सबके अंदर है। जिनकी आँखे खुल चुकी है उन्हें सब इंसान एक ही सूरज की किरणें और एक ही समुद्र की लहरें लगती है। उन्हें यह नजर आता है कि ये सब एक ही नूर से पैदा हुए हैं फिर कौन अच्छा और कौन बुरा है? कबीर साहब कहते हैं:

अव्वल अल्लाह नूर उपाया कुदरत के सब बन्दे।
एक नूर ते सब जग उपजया कौन भले को मन्दे।

प्रेमी को सन्यासी, योगी, ब्रह्मचारी, जपी-तपी, हिन्दु, तुर्क अलग-अलग भेष में एक ही मनुष्य जाति के नजर आते हैं। मजहब और मुल्कों के भेद इंसान की इंसानियत में फर्क नहीं डाल सकते।

मौलाना रूम साहब फरमाते हैं, ''मालिक का जल्वा सब जातियों में प्रकट हो रहा है। तू इंसान की शक्ल देखकर क्या सोच रहा है? इसके अंदर तो मालिक की जाति का जहूर हो रहा है।''

भगवान कृष्ण जी फरमाते हैं, ''जो इंसान मेरा जल्वा हर एक हस्ती में चमकता हुआ देखता है, अलग-अलग हस्तियों में फर्क नहीं समझता वही हकीकत को देखने वाला है; मैं उसे कभी नहीं भुलाता।''

सब धर्मपुस्तकें, ऋषि-मुनि, पैगम्बर, गुरु यही उपदेश देते रहे कि सबके साथ **प्रेम** करें। मालिक सबको एक नजर से देखता है। उसकी नजर में कौम, मजहब, मुल्क का सवाल नहीं। हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, इसाई सब लोग उसकी मौहब्बत के पात्र हैं। वह सबको अपना बन्दा समझता है। इस हकीकत को समझने वाला कभी किसी के साथ नफरत या वैर नहीं कर सकता। वह तो मालिक का आशिक है, मालिक का जल्वा सब इंसानों के अंदर है इसलिए वह सबके साथ प्यार करता है।

हजरत मसीहा जी फरमाते हैं, ''आप अपने पड़ोसी के साथ प्यार करें। दुश्मनों के साथ नफरत नहीं प्यार करें और उनके लिए दुआ करें कि वे आपको तंग करते रहें। प्रेमी सब शरीयतों को मालिक के साथ मौहब्बत करने का साधन समझता है। आज शरीयतों की लड़ाईयां, तंगदिली दुख का कारण बन रही हैं। जो इंसान **प्रेम** के कानून को हर एक कार-व्यवहार में बरतता है वह अपने मालिक के हुक्म पर फूल चढ़ाता है वही मालिक को प्यारा है। जो **प्रेम** के कानून पर नहीं चलता वह मालिक की नजर से गिर जाता है, वह खुद दुखों में फँसता है और जिसके साथ उसका संबध होता है उसे भी दुख में फँसाता है।''

इंसान की कुदरती ख्वाहिश है कि वह चाहता है कि उसे आनन्द मिले जो दिल की एकाग्रता का नतीजा है। एक्राग्रता और आनन्द की दौलत **प्रेम** करके सहज ही नसीब हो सकती है। **प्रेम** का घाटा दुखों का कारण बन जाता है। इंसान सुख माँगता है, मन की शान्ति, अमन-चैन और बेफिक्री हासिल करना चाहता है। ये सब चीज़े **प्रेम** से मिल सकती

हैं। जो प्रेम के विरूद्ध चलते हैं वे अपने दिल के टिकाव को गँवा लेते हैं। सुख की प्राप्ति **प्रेम** को छोड़कर और किसी तरह नहीं हो सकती। **प्रेम** किसी चीज का मोहताज नहीं यह सिद्दक और भरोसे का सोमा है। प्रेम दिल और जान को एक रस हालत बख्शने वाला है। **प्रेम** दीन और दुनिया का लाहा है।

प्रेम के कारण दुनिया के अंदर नूर ही नूर महसूस होता है। प्रेम की खुशबू से हवा खुशबूदार हो जाती है। **प्रेम** में खुदा के नूर की झलक रहती है इसके कारण इंसान खुशी से जान न्यौछावर कर देता है और अकल को सौ-सौ आँसु रूलाता है। **प्रेम** जैसा कोई राग नहीं और न ही इस जैसा कोई फसाना है, यहाँ तक कि मालिक का रूप ही **प्रेम** है।

दुनिया में दौलत, खूबसूरती, ताकत, बादशाही, तंदरूस्ती, इल्म, अकल, सेहत और इबादत एक से बढ़कर एक मालिक की नियामतें हैं जिन्हें इंसान प्राप्त करना चाहता है। इन सबमें कोई न कोई नुख्स है। दौलत आदमी को मगरूर बना देती है। खूबसूरती इंसान को अंधा कर देती है। ताकत, बादशाही व तंदरूस्ती जुल्म का कारण बन जाती है। इल्मियत में गुमराही, झूठ व बवाल का डर रहता है। शरीयतों और मजहबों की इबादतों में तंगदिली घर कर लेती हैं।

मालिक की इन सब नियामतों से बढ़कर **प्रेम** की बख्शिश है अगर इन नियामतों के साथ प्रेम की चाशनी हो तो ये सब गुणकारी हो जाती हैं। परमात्मा प्रेम है और दातार है। वह अपनी दातों के बदले कुछ नहीं माँगता। **प्रेम** लेना या छीनना नहीं जानता यह केवल देना ही जानता है इसलिए इसमें खुदगर्जी नहीं। सच्चा पति वही है जो स्त्री को सब कुछ देता है। सच्चे माता-पिता वही हैं जो बच्चे को प्यार से पालते हैं और उनसे किसी चीज़ की उम्मीद नहीं रखते।

प्रेम बेगरज व परोपकारी होता है। प्यार से प्यार बढ़ता है। प्रेम में दूसरा कोई भाव नहीं होता अगर दुनिया **प्रेम** में रहना सीख जाए! किसी कानून की जरूरत न रहे। हमें कानूनों की जरूरत है क्योंकि हम

अभी प्रेम से रहना नहीं सीखे इसलिए दुनिया हैवानी जज्बे पशु भावों के जंगल में टक्करें मार रही है। जब हम **प्रेम** करना सीख जाएंगे तो सब बरकतें अपने आप मुँह दिखाएंगी। जब हम अपने आपसे अपने हमसाए से सारे मुल्क से सारी मनुष्य जाति से और मालिक से प्यार करने लग जाएंगे तो हमें किसी कानून की जरूरत नहीं रहेगी। **प्रेम** सब पर हुकूमत करेगा।

हजरत ईसा ने फरमाया है, ''हे मालिक! जिस तरह तेरी बादशाहत स्वर्ग में है यह जमीन पर आ जाए! तेरी बादशाहत हमारे हृदय के अंदर है इसलिए हमें किसी कानून की जरूरत नहीं। जब तक हम आपस में प्यार नहीं करते दुनिया में अमन-चैन नहीं हो सकता। लड़ाकू जहाज, फौजें, बारूद, तोपे दुनिया में कदाचित अमन-चैन कायम नहीं कर सकते अगर हम इनके दरमियान रहेंगे तो इन्हें तैयार करने में लगे रहेंगे। हम इन्हें मनुष्यमात्र को तबाह करने में इस्तेमाल करेंगे तो एक-दूसरे से अलग हो जाएंगे। हम **प्रेम** करेंगे तो उसकी कुदरती कशिश की वजह से हम आपस में खिंचे रहेंगे क्योंकि जहाँ प्रेम है वहाँ कोई लड़ाई नहीं हो सकती अगर लड़ाई के बारे में सोचेंगे, लड़ाई के मंसूबे बनाएगे तो हमें लड़ाई ही मिलेगी।''

प्रेम के बारे में सोचें प्रेम का प्रोग्राम बनाएं, प्रेम का जिक्र करें आपको प्रेम ही मिलेगा। जब सारे मंडल में **प्रेम** की हवाएं चलेंगी तो किसी कानून की जरूरत नहीं रहेगी।

जब महात्मा यहूना इतना बूढ़ा हो गया कि वह चल भी नहीं सकता था, मुश्किल से ही बोल सकता था तब उसे सहारा देकर बच्चों की संगत में उपदेश देने के लिए ले गए। वह सिर ऊँचा करके कहने लगा, ''छोटे बच्चों! एक-दूसरे के साथ प्रेम करो। फिर दूसरी बार भी यही कहा कि एक-दूसरे के साथ **प्रेम** करो फिर तीसरी बार भी सिर ऊँचा करके कहा कि आपस में प्रेम करो और चुप हो गया।'' लोगों ने पूछा, ''महात्मा! तेरे पास इसके अलावा देने के लिए और कोई उपदेश

नहीं है?'' उसने कहा कि मैं बार-बार यही उपदेश करता हूँ क्योंकि इंसान के सब गुणों में से **प्रेम** सबसे जरूरी है। जब आपस में **प्रेम** करोगे तो प्रेम आपके अंदर जबरदस्त घर कर जाएगा बाकी सब गुणों को आसानी से ग्रहण कर लोगे, सब बरकतें अपने आप आ जाएंगी। गुरु रामदास जी कहते हैं:

जिन अंतर हर हर प्रीत है ते जन सुगढ़ स्याने राम राज।

आप **प्रेम** करेंगे तो अकलमंद हो जाएंगे। अच्छा पुरुष ही सचमुच प्यार कर सकता है। जिनके अंदर दुनिया के आधार हरि की प्रीत है असल में वही अकलमंद हैं। भूलचूक से उनके मुँह से कोई ऐसा वचन निकल भी जाए तो वे अपनी अंतरी आत्मा से **प्रेम** को नहीं भूलते और सबके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं इसलिए वे मालिक को पंसद आते हैं। गुरु नानक साहब जी फरमाते हैं:

पिर स्यों प्रीत न उल्टे कबहू जो तें भावे साईं।
नींद गई हौंमे तन थाकी साच मत हृदय समाई।

हे मालिक! जो तुझे पसंद आ जाते हैं उनके अंदर **प्रेम** की सच्ची मत समा जाती है। उनके अंदर हौमें नहीं रहती, वे तेरे रंग में रंगे रहते हैं। **प्रेम** के आने से क्रोध, निन्दा, ईष्या दूर हो जाते हैं। प्रेम सबका बादशाह है। **प्रेम** बाज है यह जिस जिस्म रूपी वृक्ष पर बैठ जाए वहाँ से गुस्सा, ईर्ष्या के पखेरू उड़ जाते हैं। दिल कौए की तरह है यह लोगों को सताने में लगा रहता है, पराए माँस को खाता है लेकिन जब **प्रेम** आ जाए तो यह हंस बन जाता है फिर यह किसी को नहीं सताता।

प्रेम आत्मा का गुण है जो सबके अंदर है लेकिन हर कोई इसे प्राप्त नहीं कर सकता। यह सुखों का चश्मा इंसान के अपने अंदर ही है। इसे लेने के लिए कुछ खर्च नहीं करना पड़ता। जब रूह संसार की मैलों और बंधनों से रहित होती है तो प्रेम अपने आप फूट निकलता है। गुरु अर्जुन साहब फरमाते हैं:

अति सुंदर कुलिन चतुरमुख ज्ञानी धनवंत।
मृतक कहिए नानका जे प्रीत नहीं भगवंत।

इंसान कितना भी खूबसूरत, ऊँची जाति वाला, चतुर, ज्ञानी, धनवान या और गुणों से भरपूर क्यों न हो! अगर उसके दिल में मालिक की प्रीत नहीं तो उसे मुर्दा समझें। फरीद साहब फरमाते हैंः

जोवन जान्दे ना डरा जे सह प्रीत न जाए।
फरीदा किती जोवन प्रीत बिन सूख गए कुम्हलाए।

प्रेम जीवन का रस है। प्रेम रूह की खूबसूरती है। प्रेम के कारण रूह चमक उठती है। **प्रेम** चेहरे के यौवन को बढ़ाने वाला है। हमें यौवन भरी जवानी के जाने का डर नहीं लेकिन हमारे अंदर से उस मालिक का **प्रेम** न घटे क्योंकि अनेकों जवानियाँ प्रीत के बिना कुम्हला गई हैं। प्रेम का राज्य चारों युगों तक रहा है।

सभी महात्मा कहते आए हैं कि मालिक और उसकी खलकत के साथ **प्रेम** करे। सबके साथ प्यार करना अपने आपकी मदद करना है। जो व्यापार या कौमों में हैं जिनका वास्ता पब्लिक के साथ पड़ता है अगर वे उनके साथ प्यार करें तो वे किसी को धोखा देने या किसी का लहु पीने से हट जाएंगे। **प्रेम** का उपदेश सुनने के लिए दुनिया तैयार हो जाती है क्योंकि प्रेम हमारे अंदर है। प्यार करने से प्रेम उभर आता है।

चाहे महात्मा कोई शास्त्र न रचें! कोई धार्मिक स्थान न बनाएं! कुछ खर्च भी न करें लेकिन वे सबके साथ **प्रेम** करते हैं इसलिए सब उन्हें प्यार करते हैं। दुनिया की उन्नति इसी में है कि हम प्रेम करना सीखें। **प्रेम** सीखने के लिए गुस्सा, निन्दा, ईर्ष्या और द्वैत आदि बिसारने पड़ेंगे। प्रेम किसी जुबान या कौमों का कैदी नहीं वह इनकी हदों को पार कर जाता है और सबका हित करता है।

अगर आप प्रेम करते हैं, आप उसके साथ और भी सैंकड़ो काम करते हैं लेकिन आपको उनका पता नहीं। इस तरह आप प्रेम करके सारे मंडलों में प्रेम की रूहें भेजते हैं तो सारी दुनिया को लाभ पहुँचता है। मौहब्बत अनूठी करामात है। मौहब्बत करने वाला इंसान अटल राज्य का मालिक होता है। जो **प्रेम** के बिना मालिक की इबादत करेगा

वह कौम या देश की क्या सेवा करेगा? जिस दिल में **प्रेम** नहीं वह चाहे जीवित नजर आता है लेकिन अंदर से मुर्दा है।

सारी दुनिया में **प्रेम** की ही रौनक है। जो लोग परमात्मा की बातें करते हैं लेकिन परमात्मा के बन्दों से नफरत करते हैं ऐसे लोग परमात्मा के भक्त या इंसान कहलवाने का हक नहीं रखते। यहाँ तक कि हिन्दू हिन्दुओं के, मुसलमान मुसलमानों के, सिक्ख सिक्खों के और भाई भाई के दुश्मन बन रहे हैं।

प्रेम एक सच्ची बरकत है जो मुर्दा दिलों को जिन्दा कर देती है। प्रेम में नशा है जिस कारण इंसान आनन्द में झूम उठता है। **प्रेम** को लोग अंधा और पागल कहते हैं क्योंकि प्रेमी अंधे और दिवाने की तरह किसी की नहीं सुनता लेकिन वह अंधा नहीं सच्ची आँख वाला होता है। वह जिसे देखता है बस उसे ही देखता रहता है। उसकी किसी तरफ तवज्जो नहीं जाती। वह उसी एक को ही सब कुछ मानता और जानता है। वह दीवाना भी नहीं कि जिस तरफ उसका ख्याल गया वह उसी तरफ का हो गया।

प्रेम एक इलाही कानून है। यहाँ सब युक्तियाँ हार जाती है और प्रेम यह बाजी ले जाता है। **प्रेम** वह आलौकिक चीज है जिसकी मिठास बयान नहीं की जा सकती। इसके रस की चाट ऐसी है जिसे छोड़ने को मन नहीं करता। इसकी खुशबू हमेशा दिल और दिमाग को ताजा रखती है। प्रेमी सदा चढ़ती कला में रहता है। **प्रेम** में जादू भरी कशिश है जो सबको खींचती है।

........शेष अगले अंक में

16 पी.एस.आश्रम में सतसंगों की जानकारी

02 फरवरी से 06 फरवरी 2009

27 फरवरी से 01 मार्च 2009

31 मार्च से 02 अप्रैल 2009